Result Mitra Daily Magazine

भारत में बुजुर्गों की बढ़ती आबादी एवं संभावित समाधान

❖ हालिया संदर्भ :

- हाल ही में आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने दक्षिणी राज्यों में बढ़ती उम्र की आबादी पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि राज्य के लोगों को अधिक बच्चे पैदा करना चाहिए।
- एन चंद्रबाबू नायडू ने कहा कि उनकी सरकार राज्य में अधिक बच्चा पैदा करने के प्रोत्साहन के लिए कानून लाने की योजना बना रही है।
- एन चंद्रबाबू नायडू ने कहा कि दक्षिणी राज्यों की कम प्रजनन दर पहले से ही उम्र बढ़ने की समस्या का सामना कर रहा हैं, जिसका असर आने वाले वर्षों में उत्तर भारत में भी पडने की संभावना है।

❖ उम्र बढ़ने और कुल जनसंख्या आकार पर डेटा क्या कहता है ?

- वर्ष 2011 की जनगणना में देरी होने के कारण देश की हालिया जनसंख्या अनुमान केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के एक तकनीकी समूह–2020 की रिपोर्ट में उपलब्ध है।
- जैसे-जैसे देश की प्रजनन दर में गिरावट आ रही है, 2020 के इस सर्वे में अनुमान लगाया गया है कि वर्ष 2050 तक भारत के हर पांच में से एक व्यक्ति की उम्र 60 वर्ष से अधिक होने की उम्मीद है, जिसका असर उत्तर भारत की तुलना में दक्षिण भारत के राज्यों में अधिक होने की संभावना है।

❖ रिपोर्ट के प्रमुख जनसंख्या संबंधी तथ्य :

- उपरोक्त रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत की जनसंख्या 2011 की तुलना में 2036 तक 25 वर्षों में 31.1 करोड़ बढ़ जाएगी।
- इन 31.1 करोड़ बढ़ी आबादी में आधी से अधिक आबादी लगभग 17 करोड़ भारत के पांच राज्यों बिहार, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और मध्य प्रदेश में बढ़ने की संभावना है।
- 2011–36 की अवधि में सबसे अधिक जनसंख्या वृद्धि उत्तरप्रदेश की लगभग 19% होने की उम्मीद है।
- वर्ष 2011–36 की अवधि के बीच भारत की कुल जनसंख्या वृद्धि में भारत के पांच दक्षिणी राज्यों आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, तेलंगाना और तमिलनाडु का योगदान केवल 2.9 करोड़ यानि 9% रहने की उम्मीद है।
- इस रिपोर्ट में कहा गया है कि पहली प्रजनन क्षमता और बढ़ती जीवन प्रत्याशा के कारण भारत की कुल जनसंख्या में 2011 से 2036 के बीच वृद्ध व्यक्तियों की संख्या 2011 के 10 करोड़ की तुलना में 2036 में 23 करोड़ तक पहुंचने की संभावना है।
- इन अवधि के दौरान भारत की कुल जनसंख्या में वृद्धि व्यक्तियों की संख्या 8.4% से बढ़कर 2036 में 14.9% होने की संभावना है।
- केरल जैसे राज्य जिसके कम प्रजनन क्षमता और मृत्यु दर के कारण 60 वर्ष और उससे अधिक उम्र के व्यक्तियों की संख्या 2011 के 13% से बढ़कर 2036 में 23% हो जाने की संभावना है।
- वर्ष 2036 तक केरल के 4 में से एक व्यक्ति वृद्धि की श्रेणी में होंगे।
- केरल की तुलना में उत्तर प्रदेश में 60+ व्यक्तियों की आबादी वर्ष 2011 के 7 प्रतिशत से बढ़कर 2036 में 12% होने की उम्मीद है।

❖ UNFPA की इंडिया एजिंग रिपोर्ट – 2023 :

- संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (UNFPA) और इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पापुलेशन साइंसेज (IIPAS) द्वारा तैयार इंडिया एजिंग रिपोर्ट–2023 के अनुसार दक्षिण भारत के पांच राज्यों आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और तेलंगाना में बुजुर्गों की आबादी पहले से ही अन्य राज्यों की तुलना में अधिक है।
- इस रिपोर्ट में कहा गया है कि 2021 और 2036 के बीच बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड, राजस्थान और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों की भी बुजुर्गों की आबादी तेजी से बढ़ेगी।
- इस रिपोर्ट के अनुसार केरल में बुजुर्गों की आबादी 2021 की 16.5% से बढ़कर 2036 में 22.8%, तमिलनाडु में 13.7% से बढ़कर 20.8%, आंध्र प्रदेश में 12.3% से बढ़कर 19%, कर्नाटक में 11.5% से बढ़कर 17.2% तथा तेलंगाना में 11% से बढ़कर 17.1% होने की संभावना जताई गई है।

Result Mitra

- इसके विपरीत इस रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्ष 2021 से 2036 के बीच बुजुर्गों की आबादी बिहार में 7.7% से बढ़कर 11% (3.3% की वृद्धि), उत्तर प्रदेश में 8.1 % से बढ़कर 11.9%, झारखंड में 8.4% से बढ़कर 12.2%, राजस्थान में 8.5% से बढ़कर 12.8% तथा मध्य प्रदेश में 8.5% से बढ़कर 12.8% हो जाएगी।
- उपरोक्त रिपोर्ट के आधार पर 2021 से 2036 के बीच 15 वर्षों की अवधि में जनसंख्या में दक्षिणी राज्यों के बुजुर्गों का अनुपात 6–7 प्रतिशत तथा उत्तर भारत के राज्यों में 3–4 प्रतिशत बढ़ जाएगा।
- इस रिपोर्ट के अनुसार उम्र बढ़ने का सूचकांक माप प्रति 100 बच्चों (15 वर्षों से कम)पर बुजुर्गों (60 वर्षों से अधिक)की संख्या मध्य और पूर्वोत्तर भारत के क्षेत्रों की तुलना में दक्षिण और पश्चिम भारत में अधिक होगी।
- इस रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2021 की तुलना में दक्षिण भारत के राज्यों में सामूहिक रूप में प्रति 100 बच्चों पर 61.7 बुजुर्ग होंगे जबकि जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, हरियाणा, दिल्ली तथा राजस्थान जैसे राज्यों में सामूहिक तौर पर प्रति 100 बच्चों पर बुजुर्गों की संख्या 38.9 होगी।
- इस रिपोर्ट में कहा गया है कि वृद्धावस्था निर्भरता अनुपात यानि 15 से 59 वर्ष के कामकाजी आयु वर्ग के 100 लोगों की तुलना में 2036 तक दक्षिण के राज्यों का अनुपात 19.4, उत्तर के राज्यों का 15.2 और मध्य भारत में 13.3 हो जाएगा।

❖ प्रजनन दर पर रिपोर्ट :

- भारत के जनसांख्यिकीय अनुसंधान में अग्रणी नमूना पंजीकरण प्रणाली के अनुसार दक्षिण के राज्यों में प्रजनन दर या प्रति व्यस्क महिला बच्चों की संख्या आंध्र प्रदेश में 1.5, कर्नाटक में 1.6, केरल में 1.5, तमिलनाडु में 1.5 और तेलंगाना में 1.5 है।
- ज्ञातव्य है कि भारत की प्रजनन दर का राष्ट्रीय औसत प्रति व्यस्क महिला बच्चों की संख्या 2 (Two)है।
- बढ़ती उम्र वाली आबादी और अपेक्षाकृत छोटी आबादी चिंता का विषय क्यों है ?
- बढ़ती उम्र वाली आबादी एवं छोटी आबादी दोनों की अलग-अलग चिंताएं हैं।
- आमतौर पर अगर किसी राज्य या देश की कुल आबादी का दो–तिहाई आबादी कामकाजी आयु वर्ग का होता है तो वह "लाभांश" को संदर्भित करता है क्योंकि इसमें निर्भरता अनुपात 50% से कम होता है।
- निर्भरता अनुपात का तात्पर्य ऐसी आबादी समूह से है, जो कामकाजी नहीं है।
- निर्भरता अनुपात को भी दो भागों में बांटा जाता है, पहला ऐसी आबादी जिसकी उम्र 15 वर्ष से कम है तथा दूसरा ऐसी आबादी जिसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक है।

- किसी भी राज्य या देश की वृद्ध जनसंख्या का उच्च प्रतिशत इस बात को दर्शाता है कि राज्य या देश को बुजुर्गों की बढ़ती जनसंख्या की देखभाल पर अधिक खर्च करना पड़ सकता है।

❖ कम आबादी :

- किसी राज्य की अन्य राज्यों की तुलना में कम आबादी का मुद्दा चुनावी परिसीमन पर सार्वजनिक चर्चा के अंतर्गत आता है।
- कम आबादी वाले राज्यों द्वारा यह आशंका जताई गई है कि जनसांख्यिकी दृष्टि से उत्तर भारत के राज्यों की तुलना में दक्षिण भारत के राज्यों को लोकसभा में कम सीटें मिलती है।

❖ जन्म दर बढ़ाने संबंधी नीतियां :

- विभिन्न सामाजिक जनसांख्यिकी विशेषज्ञों के अनुसार किसी भी देश या राज्य की जन्म दर बढ़ाने की नीतियां या कानून जिसका एन चंद्रबाबू नायडू ने उल्लेख किया है, उसमें बहुत कम सफलता मिली है।
- दुनिया में कई ऐसे देश हैं जैसे जापान, चीन, कोरिया, फ्रांस आदि ने जन्म समर्थक नीतियां अपनाई लेकिन वे उनमें सफल नहीं हो पाए।
- दुनिया में एकमात्र देश "स्कैंडिनेवियाई" द्वारा बनाई गई जन्म दर बढ़ाने की नीतियों ने उनके प्रजनन दर को निचले स्तर तक गिरने नहीं दिया।
- स्कैंडिनेवियाई सरकार द्वारा अपनाई गई जन्म दर बढ़ाने संबंधी नीतियों में पारिवारिक सहायता, बाल देखभाल सहायता, लैंगिक समानता, पितृत्व अवकाश आदि पर काम किया।
- सिर्फ वित्तीय सहायता देना किसी भी परिवार को अधिक बच्चे पैदा करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

❖ नायडू द्वारा प्रजनन दर बढ़ाने संबंधी बयान दक्षिणी राज्यों के लिए क्या मायने रखता है ?

- आज से लगभग 5 दशक पहले भारत के सामने सबसे बड़ी चिंता तेजी से जनसंख्या वृद्धि थी, जो उच्च प्रजनन क्षमता से प्रेरित थी।
- हालांकि पिछले कुछ दशकों से भारत समेत दक्षिण भारत के राज्यों ने भारत की जनसंख्या वृद्धि की गति को धीमी करने में सफलता प्राप्त की, जिसका नेतृत्व दक्षिण भारत के राज्यों ने किया।
- आंध्र प्रदेश द्वारा वर्ष 2004 में प्रजनन क्षमता का प्रतिस्थापन स्तर यानि प्रति महिला औसतन 2.1 बच्चे पैदा करने में सफलता हासिल कर ली थी।

Result Mitra

- इससे पहले दक्षिण भारत के राज्यों में केरल ने 1988 में, तमिलनाडु ने 2000 ई. में यह दर हासिल की थी।
- आंध्र प्रदेश में प्रजनन दर की गति धीमी करने के लिए एक कानून बनाया गया था, जो दो से अधिक बच्चे वाले लोगों को स्थानीय चुनाव लड़ने से रोकता था, जिसे चंद्रबाबू नायडू की सरकार ने निरस्त कर दिया है।
- ऐसे में जब भारत ग्रह पर सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बन चुका है, जिसके कारण प्रजनन दर को बढ़ाना काफी चुनौती पूर्ण हो सकता है।

❖ आगे का रास्ता :

- विभिन्न सामाजिक जनसांख्यिकी विशेषज्ञों के अनुसार यदि प्रजनन दर बढ़ाने में प्रोत्साहन काम नहीं करते हैं तो इसका सबसे सरल समाधान आंतरिक प्रवास है।
- आमतौर पर कुल जनसंख्या में प्रजनन दर, मृत्यु दर और प्रवासन तीन प्रमुख योगदानकर्ता होते हैं।
- "प्रवासन" उत्तर और दक्षिण भारत के बीच जनसांख्यिकीय परिवर्तन की बेमेल गति के कारण उत्पन्न असंतुलन को भी दूर कर सकता है।
- "प्रवासन" से दक्षिण राज्यों को कामकाजी उम्र के लोग ज्यादा मिलेंगे, जिससे राज्यों को इन जनसंख्या की पोषण, शिक्षा आदि पर कम खर्च करना पड़ेगा और राज्य को कामकाजी उम्र की प्रवासी आबादी से सीधा लाभ मिलेगा।
- "प्रवासन" का यह मॉडल संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देशों में दशकों से अपनाया जा रहा है।
- अप्रवासियों द्वारा आर्थिक उत्पादन एवं उनकी प्रजनन क्षमता दुनिया भर में अमेरिका के आर्थिक प्रभुत्व को बनाए रखने में मदद की है।
- अधिक बच्चे पैदा करने के बजाय भारत जैसे देश को अपने श्रम बल की आर्थिक उत्पादकता को बढ़ावा देने के लिए काम करना होगा।

Result Mitra TM